॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! आप कैसी मेरी पवित्र माँ है। हे माँ! तू कितनी भोली है, तू कितनी पवित्र है। हम तेरे आङ्गन में आते हैं, तू विष्णु रूप से भी कहलाई गई है। शक्ति रूपों से भी तेरा प्रतिपादन किया गया है। माँ! तू कितनी भोली है। जब हम तेरे आँगन में आते हैं, तो ज्ञान और विवेक से युक्त होकर के आते हैं, माँ! वास्तव में तू हमारे हृदय का भरण कर देती है। तू, कैसी महत्ती है। तू कैसी ममतामयी है, बालक क्षुधा से पीड़ित हो रहा है माँ, तू उसे लोरियों का पान कराती हुई, उसकी क्षुधा और पिपासा को शान्त कर देती है। इसी प्रकार हे माँ! मैं तेरे द्वार पर, विवेकी बन करके आना चाहता हूँ। मुझे शक्ति दे, बल दे, ओज दे, तेज दे। जिससे माता मैं तेरी उस महान् ज्योति का दर्शन कर सकूँ। तेरी जो महान् ज्योति है तेरी जो करूणामयी ज्योति है, जिस करूणा से हे विष्णु! आप संसार का लालन पालन करते हैं! मैं भी तेरे द्वार पर आना चाहता हूँ। उस पिपासा में मैं रमण करना चाहता हूँ जिस पिपासा के लिए सदैव मानव अपने में ही परणित हो जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 559 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 634
वर्ष : 47 44 समग्र वर्ष : 53

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. ओ३म् रूपी सूत्र	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-22
4. सुविधा न होने पर याग	पूज्यपाद-गुरुदेव	23-34
5. ऋषियों के उद्‌गार		35
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		36-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) **PAN No. – AAAAV7866J**

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् रूपी सूत्र

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने गए हैं और जो भी मानव उसका वरण कर लेता है अथवा उसे वर लेता है वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। इसीलिए हमें उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना लेना चाहिए अथवा उसे वर लेना चाहिए क्योंकि उसको ही प्राप्त होना है और वे जो मानो उसका जो विचित्र मार्ग है उसी मार्ग का प्रत्येक प्राणी को पथिक बनना है। तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बनाना चाहते हैं और हमारे हृदय की उत्कट इच्छा रहती है क्या हम उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बनाएँ और उसे अपने अन्तर्हृदय में मानो उसके ज्ञान और विज्ञान को अपने हृदय का ग्राही बनाएँ जिससे संसार का जितना भी ज्ञान है अथवा विज्ञान है वे सर्वत्र मानव के अन्तर्हृदय में विद्यमान रहता है क्योंकि उसके ऊपर जो भी मानव अनुसन्धान करता है अथवा विचारता रहता है कि हमारा जो अन्तर्हृदय है हम उस हृदयग्राही बन करके अपने अन्तर्हृदय में जो भी क्रियाकलाप हो रहा है उस क्रियाकलाप में हम परणित हो जाएँ।

वेद मन्त्र ज्ञान-विज्ञान का स्त्रोत

मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्रः हमें कुछ कह रहा है मानो हमें

कुछ प्रेरणा दे रहा है, हमें उद्धृत कर रहा है। हे मानव! तू इससे प्रेरणा ले करके, प्रेरणादायक बन करके अपने जीवन को तू महान् बना और अपने मानवीय जीवन को पवित्र बनाता हुआ, ये जो संसार है इस संसार में प्रत्येक मानव बेटा! मान और अपमान से गृहित हो रहा है मानो मान-अपमान की तरङ्गों से हमें पार होना है। जो भी मानव उस परमपिता परमात्मा के आङ्गन में अथवा उसकी प्रतिभा में रत्त होना चाहता है वह बेटा! अपने कण्ठ में एक माला को धारण करना होगा क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्रः वेद की ऋचाएँ ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ती रहती हैं। प्रत्येक वेद मन्त्र में बेटा! परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान है अथवा उसमें जड़वत् का भी विज्ञान है और चेतनवत् का भी। परन्तु देखो ऐसा हमारे आचार्यों ने कहा है अनुसन्धानवेत्ताओं के समीप बेटा! नाना प्रकार के प्रश्न, नाना प्रकार की धाराओं की उपलब्धियाँ होती रहती हैं।

ओ३म् का उच्चारण

एक समय बेटा! महर्षि शाण्डिल्य मुनि महाराज से ये प्रश्न किया गया क्या महाराज जब तुम वेदों का गान गाते हो, जब वेदों की ध्वनि में ध्वनित होते हो तो प्रत्येक वेद मन्त्र के साथ में तुम ओ३म् का उच्चारण करते हो। मानो ओ३म् का उच्चारण तुम क्यों कर रहे हो? तो मुनिवरो! देखो महर्षि शाण्डिल्य मुनि महाराज ने उन दार्शनिकों से ये कहा कि तुम ये जानते हो कि प्रत्येक वेद मन्त्र में परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान है, तरङ्गेवाद है मानो नाना प्रकार का अणु और परमाणु उसमें रत्त हो रहा है। प्रत्येक शब्द वेदों के मन्त्रों का हमें मानो ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ाता रहता है। चाहे वह अध्यात्मिक विज्ञान हो चाहे वह भौतिक विज्ञान हो परन्तु देखो उसकी उड़ाने उड़ी जाती हैं। एक परमाणु है वो वायुमण्डल में मानो गमन कर रहा है वह मानो अपनी प्रतिक्रियाओं में क्रीत हो रहा है, क्रीड़ा कर रहा है। परन्तु मुझे ऐसा स्मरण है वैज्ञानिकों ने उस परमाणु को जब अपने में रत्त करके बेटा!

उसका विभाजन किया तो विभाजन करने से ही मानो देखो उस एक ही परमाणु में बेटा! जितना ये ब्रह्माण्ड है मानो उस ब्रह्माण्ड का सर्वत्र मानो उसमें दिग्दर्शन हो रहा था। तो मेरे प्यारे! जहाँ एक-एक परमाणु में मानो देखो इस संसार, ब्रह्माण्ड का चित्रण होता हो चित्ररम् रथप प्रव्हा वाचन्नमम् ब्रह्मे मानो देखो जहाँ चित्रण हो रहा हो मानो उस ब्रह्माण्ड का कोई सूत्र अवश्य है। तो मेरे पुत्रो! जब सूत्र की वार्त्ता आई तो मानो शाण्डिल्य ऋषि महाराज ने कहा हे ऋषियों! मेरे विचार में ये आता है क्या ओ३म् का उच्चारण इसीलिए मानव को करना चाहिए क्योंकि जितना भी ज्ञान और विज्ञान प्रत्येक वेद मन्त्रों के गर्भ में है परन्तु उसका कोई सूत्र है और वह यदि कोई सूत्र है तो बेटा! वो ओ३म् हो सकता है। ओ३म् ही मानो प्रत्येक वेद मन्त्र का सूत्र बना हुआ है। **प्रत्येक वेद मन्त्र बेटा! मनके की भाँति है और वह मनका मानो देखो ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है।** जब ओ३म् रूपी सूत्र में प्रत्येक वेद मन्त्रों का ज्ञान और विज्ञान पिरोया जाता है तो मेरे पुत्रो! देखो महापुरुषों का बेटा! एक माला के सदृश वह माला बन जाती है और उस माला को मुनिवरो! देखो ऋषि मुनि अपने कण्ठ में धारण करते हैं अथवा वह जो माला है वह बड़ी विचित्र बन करके रहती है। तो मेरे प्यारे! इसीलिए प्रत्येक मानव को ओ३म् रूपी सूत्र में अपने को पिरो देना चाहिए। ओ३म् रूपी सूत्र में जो मानव अपने को पिरो देता है बेटा! वो धन्य हो जाता है। वह अपने में महान् और पवित्र बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो जिस मानव की ये धारा, ये माला छिन्न-भिन्न हो जाती है वह मानव मुनिवरो! देखो मोक्ष के मार्ग से भी मानो देखो! अपने में हठित हो करके इस पुनः संसार में पुनरुक्तियों को प्राप्त होता रहता है।

परमपिता परमात्मा का सन्निधान

मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें बेटा! ये निर्णय देते हुए कहा था

जैसे मानो सन्निधान मात्र से ही मेरे प्यारे! देखो प्रत्येक अणु और परमाणु का स्वभाव जागरुक हो जाता है परन्तु देखो इसी प्रकार हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा का सन्निधान मात्र से ही मेरे प्यारे! देखो ये सृष्टि का क्रम प्रारम्भ हो जाता है। नाना-नाना लोक-लोकान्तर एक-दूसरे में सहायक बनने लगते हैं, एक-दूसरे में ओत-प्रोत की चर्चाएँ मैंने कई काल में तुम्हें प्रगट की हैं। आज मैं करना नहीं चाहता हूँ, विचार ये मानो देखो प्रत्येक अणु और परमाणु अपने में सहायक बना हुआ है जैसे मानो देखो मधुमक्ख होता है उसमें एक मानो देखो उसमें जो एक मधुमक्खी है वो शासन कर्त्ता होती है उसको मानो देखो धिराज, उसको धिराज मक्ख कहते हैं। मानो देखो उसी के अन्तर्गत सर्वत्र मानो देखो मधुमक्खियाँ अपना क्रियाकलाप करती रहती हैं। नाना प्रकार का अमृत ला करके एक स्थली पर मानो स्थिर कर देती हैं। परन्तु जब तक वह शासन करता रहता है तभी तक मुनिवरो! देखो मधुमक्खियाँ मधु को एकत्रित करती हैं और जब उसका शासन छिन्न-भिन्न हो जाता है मेरे प्यारे! वो अमृत को एकत्रित करना समाप्त कर देती हैं। इसी प्रकार मुनिवरो! देखो यह हमारे मानव शरीर में भी ये प्रतिक्रिया हो रही है। यही मानो ओ३म् रूपी सूत्र मानो जब किसी का सूत्र ही नहीं रहेगा तो बेटा! ये जगत् की रचना कैसे दृष्टिपात आएगी। इसीलिए हमारे यहाँ सूत्र होना चाहिए। उस सूत्र की विवेचना करते हुए हमारे आचार्यों ने अपनी बहुत ऊर्ध्वा में अपने विचार व्यक्त किए हैं। उन्होंने कहा है, **शाण्डिल्य मुनि का तो ये कथन है** कि हमारा जो मानव का ये शरीर है इसका जो अणु और परमाणु है मानो वह भी किसी सूत्र में पिरोया हुआ है और वह सूत्र यदि हो सकता है तो ओ३म् ही सूत्र है। जो मानो देखो प्राणो का रक्षक है प्राणों को वर्धा, प्राणों को देने वाला है, ऊर्ध्वा में देने वाला है। मानो वही तो प्राणस्वरूप कहलाता है। तो आओ मेरे प्यारे! हम उस ओ३म् रूपी सूत्र को अपना मानो प्रिय बनाते हुए अपने जीवन को महान् और पवित्र बनाते चले जाएँ।

महर्षि शाकल्य मुनि महाराज का तप

मेरे प्यारे! आओ मुझे इसी वाक्य को लेकर के एक वार्त्ता मुझे स्मरण आ रही है। मानो जिनका धागा मुनिवरो! देखो सूत्रः ये सूत्र मानो माला से भिन्न हो गया है, जो भी सूत्र माला से भिन्न हो गया मेरे प्यारे! वो कितना महान् मानो उनको कितना कठिन अपने पुनः तपस्या में परणित होना हुआ है। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है एक समय महर्षि शाकल्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान थे। महर्षि शाकल्य मुनि महाराज प्राणों का निरोध करते थे–प्राण को अपान में मानो अपान को व्यान में, व्यान को समान में और समान को उदान में परणित करते हुए। मेरे प्यारे! देखो अन्तःकरण में जो हमारे जन्म-जन्मान्तरों के जो संस्कारों का उद्बुद्ध होना मानव के उन संस्कारों का क्षय कर रहे थे। क्षय करते-करते बेटा! उन्होंने बहुत तप किया। उन्होंने कई समय बेटा! वायु का सेवन किया। अपने मानवीय जीवन में ये विचारा उन्होंने क्या मुझे अनुष्ठान के द्वारा ही मानो चित्त में जो भिन्न-भिन्न नाना संस्कार विद्यमान हैं जन्म जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान हैं। एक समय बेटा! उन्होंने इन पाँचों प्राणों का जो निरोध किया और इसमें नाग और देवदत्त की जो दोनों की पुट लगाई बेटा! देखो मानो इसमें मन को पिरोया गया। जब मन को पिरोया गया तो ऐसा बेटा! उनके जीवन काल की ऐसी आभा प्राप्त होती है उन्हें बेटा! देखो सात जन्मों की क्या उन्हें करोड़ों जन्मों के संस्कार उनके समीप आ गए और करोड़ों जन्मों के संस्कार बेटा! वो समाधि में मानो प्रायः दृष्टिपात करने लगे। तो मुनिवरो! देखो वह उनका क्षय कैसे करने लगे। मेरे प्यारे! नाना-नाना प्रकार के प्राणायम करने से जैसे शीतली प्राणायम की मैंने तुम्हें कई काल में चर्चाएँ की हैं। मानो देखो खेचरी मुद्राएँ, व्रीत मुद्राएँ, सोमय मुद्राएँ मेरे पुत्रो! नाना प्रकार की मुद्राओं में तुम्हें मैं कई काल मे ले गया हूँ। आज मुझे इतना समय मानो उन

मुद्राओं में नहीं ले जाऊँगा। विचार क्या मानो देखो उन मुद्राओं के द्वारा मुनिवरो! देखो महर्षि शाकल्य मुनि महाराज ने बेटा! बारह-बारह वर्ष का उन्होंने अनुष्ठान किया और उस अनुष्ठान में वायु का सेवन करते थे। एक अनुष्ठान किया तो उन्होंने पत्र और पुष्पों को सेवन किया। मानो एक अनुष्ठान किया तो मुनिवरो! देखो उन्होंने अग्नि, अग्नि परमाणुओं को अपने में सिञ्चन करना प्रारम्भ किया। मेरे प्यारे! उनका अनुष्ठान इतना विचित्र रहता था मुझे स्मरण है प्रातःकालीन बेटा! वो मानो देखो प्रातःकालीन वह अपने वनो में से अपने आश्रम के अङ्ग-सङ्ग मानो साकल्य एकत्रित करते थे और वह साकल्य एकत्रित करके उनके द्वारा बेटा! अग्नि को प्रज्वलित करना और अग्नि को प्रज्वलित करके वो साकल्य का हुत देते थे। जब साकल्य की आहुति देने लगे तो मुनिवरो! देखो वह नित्यप्रति उनका यह क्रियाकलाप चलता रहता।

मेरे प्यारे! देखो वह जिस राष्ट्र में वो गमन करते थे जिस राष्ट्र में उनका वास रहता था मेरे प्यारे! देखो सोमवृत्तिका नामक राजा थे। उन्होंने ऋषि के लिए बेटा! गऊ के घृत का मानो प्रतिरोध किया और उन्होंने बेटा! गऊ का घृत देना प्रारम्भ किया। परन्तु ऋषि ये जानते थे क्या ये गौ घृत मैं कैसा दे रहा हूँ? मेरे प्यारे! देखो सोमवृत्तिका जो राजा थे वे मानो देखो अपने स्वयँ, कृषि उद्गम करते थे और उन्हीं में गौऊओं का पालन करते थे। और उसमें जो घृत लेते बेटा! वो ऋषि को प्रदान यज्ञ के लिए किया करते थे। ऐसा बेटा! मुझे स्मरण आ रहा है क्या मानो देखो जब वो घृत देते थे उनके द्वारा वो याग करते थे। जब वो याग करने लगे और स्वतः बेटा! उसको पान नहीं करते थे। वह खेचरी मुद्रा से सोमवृत्तिका मानो मुद्रा से बेटा! वायु का वो सेवन करते थे। वायु को सेवन करना अग्नि होत्र के द्वारा गौ घृत के द्वारा साकल्य स्वतः ही एकत्रित करके वनो से बेटा! उसके द्वारा वो याग कर्म करते थे। याग इसलिए करते थे कि वायुमण्डल पवित्र बन जाए। मेरे

अङ्ग-सङ्ग मानो कोई भी अशुद्धियाँ न रहें जिससे मैं संस्कारों को निरोध करने में मानो समाधि में मेरे में वह परमाणु सहायक बन सके।

याग में सोमवृत्तिका सोमवाचक मुनि क आगमन

मेरे प्यारे! ऐसा जीवन है क्या शाकल्य मुनि महाराज एक समय बेटा! याग कर रहे थे तो। मुनिवरों देखो कहीं से भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो सोमवृत्तिका सोमवाचक मुनि महाराज बेटा! कहीं से भ्रमण करते-करते शाकल्य मुनि के समीप आ गए। तो शाकल्य मुनि महाराज प्रातःकालीन याग कर रहे थे। वह भी याग में आ करके बेटा! अपना साकल्य देने लगे। जब देने लगे तो उन्हें मुनिवरो! देखो उन्होंने अपने में अपने प्राण को निरोध करके बेटा! ये दृष्टिपात किया मन के द्वारा क्या ये जो मानव आहुति दे रहा है, ये तो अशुद्ध दे रहा है। इसका मन मानो शान्त नहीं है। इसके मन में अशान्ति है। तो मुनिवरो! देखो उन्होंने कहा हे ऋषिवर! आप कृपा करें आप मेरे इस याग में आहुति न दें। उन्होंने कहा भगवन् क्यों? उन्होंने कहा तुम्हारा मन अशान्त है, तुम्हारे मन जो अशान्त है वह मेरे वायुमण्डल को मानो ये आहुति तेरी अशान्त कर देगी। मेरा मानो देखो वायुमण्डल इनसे पवित्र नहीं बनेगा। तो मेरे प्यारे! देखो जब ऋषि ने ये वाक्य श्रवण किया तो ऋषि चरणों में ओत-प्रोत हो गए और उन्होंने कहा हे भगवन्! आप तो बड़े विचित्र महान् हैं। भगवन्! मानो आपने मेरे अन्तर्हृदय की अशान्ति को जान लिया। उन्होंने कहा ये कारण क्या है? क्या महाराज मैं अपने विद्यालय में से आ रहा हूँ। एक ब्रह्मचारी को मैंने मानो देखो शारीरिक दण्ड दिया और वो दण्ड मैंने कठोर दे दिया है। उस दण्ड के होने से मेरे हृदय में ये कल्पना हो रही है क्या ये तूने पाप कर्म किया है, अनायास मानो ब्रह्मचारी को दण्डित किया है और ये इसका पाप तुझे अवश्य प्राप्त होगा। अब मानो देखो पाप शुभ कर्मों का अशुद्ध कर्मों का दोनों का संग्राम हो रहा है मेरे अन्तर्हृदय में। तो मुनिवरो! देखो जब उन्होंने

ये श्रवण किया तो मुनिवरो! देखो वे शान्त हो गए। आहुति देनी उन्होंने शान्त कर देई। शाकल्य मुनि ने इस प्रकार का याग किया।

महर्षि शाकल्य मुनि महाराज की प्रभु से वार्त्ता

मुनिवरो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है क्या महर्षि शाकल्य मुनि महाराज ने उनके साहित्य से ये प्रतीत हुआ क्या मुनिवरो! **उन्होंने इस प्रकार के बारह-बारह वर्ष के बेटा! देखो लगभग नौ अनुष्ठान किए** और नौ अनुष्ठान करके बेटा! वह मानो देखो उनका जो अन्तर्हृदय में जो मानो चित्त के मण्डल में नाना जन्मों के संस्कार थे अशुद्ध उनका क्षय हो गया। मेरे प्यारे! जब उनका समापन हो गया तो वे मोक्ष के निकट चले गए। जब वे मोक्ष के निकट चले गए तो मुनिवरो! अपने प्रभु से वार्त्ता प्रगट करते थे। मानो उन्होंने उस साकल्य को समाप्त कर दिया, याग को परन्तु वे परमपिता परमात्मा के अपनी भावनाओं को साकल्य बना करके बेटा! परमात्मा (की) चेतना में परणित करने लगे।

महर्षि शाकल्य मुनि महाराज की माला का क्षय

जब वे परणित करने लगे तो मुनिवरो! देखो वह ब्रह्मे वाचम् ब्रहे। एक समय बेटा! वह उनकी ओ३म् रूपी जो वह माला उन्होंने धारण की थी प्राणायम की और ओ३म् रूपी सूत्र में मानो वह प्राण और मन को दोनों को पिरो दिया था उस माला को उसमें धारण कर लिया था। बेटा! उस माला का कुछ क्षय हो गया। और क्षय क्या हुआ मुनिवरो! देखो एक समय वाणों सम्भूति एक दैत्य था, मानो देखो दैत्य उसे कहते हैं जो मांस भक्षण करने वाला हो। मानो देखो वह कहीं भ्रमण करते हुए एक हिरणी के मानो देखो पीछे वो गमन कर रहे थे। हिरणी अग्रगणीय है और मानो वो दैत्य उसके पश्चात् में। तो मेरे प्यारे! देखो उन्होंने अपने शस्त्र का जैसे ही आक्रमण किया वह हिरणी पूर्ण रूपेण मानो देखो गर्भ से थी। वह गर्भवती मानो गर्भाशय में उनके शिशु था। मेरे प्यारे! जैसे उन्होंने

अस्त्र-शस्त्र का प्रहार किया तो मुनिवरो! देखो हिरणी के गर्भ से उसका बाल्य मानो पृथक हो गया और हिरणी आगे मानो देखो भ्रमण करती तीव्र गति से भयभीत में मानो अग्रगणीय बन गई। ऐसा बेटा! देखो ऐसा उन्होंने व्रहे वह भी आगे चला गया परन्तु शाकल्य मुनि के आश्रम में जहाँ वो परमपिता परमात्मा से वार्त्ता कर रहे थे, ओ३म् रूपी सूत्र में अपने को पिरो दिया था, बेटा! मानो देखो उस माला का क्षय हुआ। तो बेटा! हिरणी का बाल्य मानो जरायुज में वह विद्यमान है, कोई-कोई श्वास की गतियाँ चल रही हैं। तो मेरे प्यारे! देखो वह जैसे श्वासम ब्रह्म वाहाः मानो ऋषि ने बेटा! मानो उसके अङ्गम ब्रह्मा उसके मुखारबिन्दु में कुछ जल का प्रोत किया तो बेटा! उसके श्वासों की गति प्रबल बन गयी। मानो वह मूल में ये कि वह जीवित हो गया और जीवित हो करके बेटा! ऋषि ने अपने कण्ठ में उसको कण्ठित कर दिया। अपने आङ्गन में आलङ्गन करते हुए मानो उसे प्रीति की तो बेटा! वह जो परमपिता परमात्मा से एक माला बनी हुई थी उस माला का क्षय होने लगा। तो मेरे प्यारे! देखो उस बाल्य से मोह हो गया। परमात्मा से वार्त्ता जो मोक्ष के निकट ऋषि जा रहा था मानो देखो वह वार्त्ता ऋषि की समाप्त हो गयी। मेरे प्यारे! ममता में परणित हो गया।

जब ममता में परणित हो गया तो मानो देखो हिरणी के बाल्य से वार्त्ता करने लगे। वे मोह ममता में मानो परणित हो गए ऐसा बेटा! स्मरण है क्या मुनिवरो! देखो वह पुनः बाल्य भोज करते उसके पश्चात् ऋषि भोज करते। तो बेटा! उससे इतना अत्यन्त मोह बन गया मानो पूर्ण आयु होने पर मेरे प्यारे! हिरणी के बाल्य का मृत्यु हो गया। जब मृत्यु हो गया और उसके शरीर का विच्छेद हो गया तो ऋषि को बेटा! ममता आ गयी। मानो उसके मोह में उसे शान्ति नहीं प्राप्त हुई। तो मेरे प्यारे! कुछ समय के पश्चात् उसी ममता में उस अन्तरात्मा ने बेटा! उस शरीर को त्याग दिया।

शाकल्य मुनि जी की आत्मा का पुनः से आगमन

जब शरीर को त्याग दिया त्याग देने के पश्चात् बेटा! देखो अम्ब्राहा अम्बिका नामक मानो देखो राजा के यहाँ अम्बिका राजा उस समय बड़े महान् मानो देखो महान् सतोगुणी थे। अम्बिका राजा के यहाँ मानो उनकी पत्नी का नाम शकुन्तकेतु था और शकुन्तकेतु के गर्भ में बेटा! उस आत्मा का प्रवेश हो गया। मानो देखो आत्मा का जब प्रवेश हो गया तो माता के गर्भ में बेटा! जब आत्मा मानो शिशु के रूप में प्रवेश कर गया तो मेरे प्यारे! देखो वह बाल्य वह जो आत्म मानो शाकल्य मुनि का आत्मा संस्कारों से विहीन था, परमात्मा के निकट से आए थे परन्तु उसे ज्ञान था माता के गर्भाशय का तो मेरे प्यारे! वहाँ रुद्र की नदियाँ गमन कर रही हैं। मानो देखो एक ऐसा अपार उसे कष्ट हुआ मानो माता जो तीक्ष्ण पदार्थों का पान करती वह भी अपार कष्ट हो रहा था। तो वह आत्मा माता के गर्भस्थल में कह रहा था प्रभु से हे भगवन्! मैंने मानो मोह किया है प्रभु मैं आगे चल करके मोह नहीं करूँगा। मानो इस नरक से मुझे दूरी करो मैं नरक के गृह में आ गया हूँ यह गृह मुझे नहीं चाहिए। प्रभु मैने प्रयास तो किया था परन्तु मेरी माला का एक मानो देखो मन का विच्छेद हो गया है। हे प्रभु! मानो देखो मुझे यहाँ से दूरी कर दो। तो मेरे प्यारे! ऐसा अब्रहे प्रार्थना करता रहा क्योंकि आत्मा तो सदैव प्रार्थना अपने प्रभु की करता ही रहता है। मेरे पुत्रो! ऐसा अब्रहे कुछ समय के पश्चात्, नौ माह के पश्चात् माता के गर्भ से वह आत्मा पृथक् हो गया। मानो देखो शरीर को धारण करके जब वह आत्मा आ गया तो बेटा! देखो राजा के यहाँ मानो अम्बिका राजा के यहाँ एक आनन्द के स्त्रोत बहने लगे, मानो एक आनन्द आने लगा। मेरे प्यारे! देखो वेद के पठन-पाठन करने वाले कहीं याग हो रहा है, कहीं साम गान गाया जा रहा है, कहीं मानो यजूँषि वेदों का पठन-पाठन हो रहा है। मेरे प्यारे! अपने में देखो ब्राह्मणजन क्या ऋषि मुनि राष्ट्र में रहने वाले मानो देखो पुत्रवत् को आनन्द की

आभा में परणित करा रहे थे। राजा अपने में प्रसन्न हो रहा था। सर्वत्र राष्ट्र में बेटा! एक आनन्दमयी ज्योति जागरुक हो गयी राजा के यहाँ राजकुमार हुआ है मानो इस प्रकार की स्वर ध्वनियाँ होने लगीं।

मेरे प्यारे! देखो कुछ समय के पश्चात् वह बालक प्रबल हुआ परन्तु वह माता के गर्भ में जो उसने सङ्कल्प लिया था क्या मैं मोह नहीं करूँगा। मेरे प्यारे! देखो उस बालक को किसी से मोह नहीं था। उस बाल्य का नाम ही उन्होंने बेटा! जड़ भरत के रूप में परणित किया, वही बालक जड़ भरत के रूप में मानो देखो अपनी आभा में रत्त रहा। तो मेरे प्यारे! देखो उन्होंने, राजा ने राष्ट्र के जो मानो देखो वैद्यराज थे उन वैद्यराजों को चिकित्सा के लिए चिकित्सालय में परणित कराया इसका मस्तिष्क अशुद्ध है, मानो भ्रमित है। तो मेरे प्यारे! देखो उसकी चिकित्सा हुई, कुछ न हो सका। कुछ समय के पश्चात् उन्होंने कहा इसको वाटिका में नियुक्त कर दो। मेरे प्यारे! जैसे वो वाटिका में रहते तो वाटिका में मानो देखो उनके यहाँ जो पुष्प और जो नाना मानो देखो वृक्ष थे उनको नष्ट करने लगा।

महाराजा जड़ भरत का भयङ्कर वन में गमन

जब उन्हें नष्ट करने लगा तो उन्होंने देखो वह वाटिका के स्वामी ने जा करके राजा से कहा प्रभु वह जो राजकुमार हैं उसने अमुख वाटिका का विनाश कर दिया है। अमुख वृक्ष को समाप्त कर दिया है, अब क्या करें? तो मेरे प्यारे! राजा ने कहा था भगवन्!, तो राजा उस वाटिका में पहुँचे तो राजा ने कहा कि जाओ मेरे राष्ट्र से तुम दूरी हो जाओ, तुम मेरे राष्ट्र में अन्न ग्रहण नहीं करना। मेरे प्यारे! देखो जड़ भरत ने राजा के वाक्य को पान करके मानो देखो उस वाटिका को त्याग करके भयङ्कर वन में चले गए। और वन में बेटा! पत्र-पुष्पों को पान करना और मानो देखो वह अपने में शान्त जैसे जड़वत रहता है इस प्रकार वह आत्मा में लीन रहते, आत्मा में ज्ञान और विज्ञान से युक्त रहते।

राजा नहुष का जड़ भरत से मिलन

मेरे प्यारे! देखो महाराजा मनु वंश में बेटा! देखो नहुष नाम के राजा नहुषाम भवुति प्रवहा नहुषू मुनि ने बेटा! अपने ज्येष्ठ पुत्र को राष्ट्र दे करके क्योंकि उस समय को ये नियमावली बेटा! बनी हुई थी क्या राजा मानो देखो अपने में ब्रहेवाचक प्रवहा लोकाम् मानो देखो अपने राष्ट्र को ज्येष्ठ पुत्र को दे करके वो सन्यास को प्राप्त हो जाते थे। प्रभु का चिन्तन करने के लिए तत्पर हो जाते थे। इसलिए बेटा! प्रजा मानो देखो राजाओं की आज्ञानुसार वह भी मानो देखो ज्ञान और विज्ञान और परमात्मा के चिन्तन में सदैव तत्पर रहती थी। तो मेरे प्यारे! ऐसा स्मरण है क्या मानो नहुषू नाम के राजा बेटा! भ्रमण करते हुए चार कहारों की वृत्तियों में बेटा! देखो वह पालिका में नियुक्त हो करके वह जब गमन कर रहे थे तो बेटा! देखो एक कहार, एक सेवक उनका मानो देखो रुग्ण हो गया। रुग्ण हो जाने से मङ्गलम् व्रहे वाचम् मेरे प्यारे! देखो वे जो और सेवक थे उन्होंने कहीं जड़ भरत विद्यमान थे उसे ला करके पालिका में नियुक्त कर दिया। वह जो पालिका को लेकर गमन करने लगे तो बेटा! वो जानता नहीं था कैसे हम इसको मानो अपने में सुसज्जित कर सकते हैं। तो कहीं राजा नीची स्थली पर हो जाए, कहीं ऊर्ध्वा में जो जाए तो राजा को क्रोध आ गया। बेटा! जब क्रोध आया उन्होंने पाली को शान्त करके उस जड़ भरत को मानो अपने डण्डों से उन्हें आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। जब जड़ भरत को खूब डण्डित किया, डण्डित करने के पश्चात् जैसे राजा शान्त हुए ऐसे ही मानो देखो जड़ भरत अपने में मग्न होने लगा। वह प्रभु की महिमा को दृष्टिपात करके हर्ष ध्वनि करने लगा और प्रभु से कह रहा था प्रभु! तुम कितने अद्भुत हो, तुम कैसे महान् महिमावादी हो। हे प्रभु! मैंने तो पूर्व के जन्म में मोह ही किया था प्रभु और जो ये क्रोध भी करते हैं, मोह भी करते हैं, काम भी है परन्तु भगवन्! जब आपके द्वार पर जाएँगे तो इनकी आप क्या दशा करेंगे। हे प्रभु! मैंने तो केवल मोह ही मोह

किया है। मेरे प्यारे! जब वो हर्ष ध्वनि और ये प्रभु से याचना कर रहे थे तो महाराजा नहुषू ने कहा भगवन्! आप कौन है? उन्होंने कहा मुझे मानो जड़ भरत कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो राजा उनके चरणों में ओत-प्रोत हो गए। उन्होंने कहा प्रभु! मैंने तो ये निश्चय किया था क्या मैं जड़ भरत को अपना गुरु बना करके मानो उससे गुरु दीक्षा ले करके मैं तपस्या करूँगा। हे प्रभु! मैंने आपको दण्डित किया है, मैं कितना महा पापी बन गया हूँ, भगवन्! मेरे पापाचार की कोई पुष्टि न रही। तो मेरे प्यारे! जब उन्होंने ये वाक्य कहा तो महात्मा जड़ भरत तो मौन और हर्ष ध्वनि कर ही रहे थे और प्रभु से ये ही याचना कर रहे थे कि प्रभु! मैंने तो मोह ही किया है परन्तु जो ये कामी, क्रोधी, लोभी, मोही जब तेरे राष्ट्र में पहुँचेंगे तो प्रभु! इनकी क्या दशा करोगे आप। तो मेरे प्यारे! देखो वह महाराजा जड़ भरत उनके समीप मानो देखो पालिका भी शान्त, सेवक भी राष्ट्र को चले गए और उनके चरणों की वह वन्दना करते रहे।

महाराजा नहुष को उपदेश

मेरे प्यारे! देखो महाराजा नहुषू को उन्होंने उपदेश दिया जब मङ्गलम् ब्रही ब्रताम् देवाः जब मुनिवरो! लगभग एक वर्ष हो गया सेवा करते हुए उसके पश्चात् महाराजा जड़ भरत ने कहा हे राजन्! तुम्हारी राष्ट्रीय प्रवृत्ति समाप्त हुई अथवा नहीं? उन्होंने कहा प्रभु मेरी प्रवृत्ति तो शान्त हो गयी है। मेरे प्यारे! देखो महाराजा नहुषू को उन्होंने कहा तो तुम मानो उस माला को धारण करो जिस माला को मैंने किसी काल में धारण किया था और मैं मोक्ष के निकट चला गया था। मेरी माला का एक मनका क्षय हो गया मानो देखो मुझे ही मोह हो गया और मोह होने से मेरी पुनःरुक्तियाँ दशा बन गयी है। राजा ने मुझे अपार कष्ट दिया, माता के गर्भ में जो अपार कष्ट हुआ उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। मुझे जो अपार आपात हुआ है मैं वर्णन करने में असमर्थ हूँ।

तो मेरे प्यारे! देखो जब उन्होंने ये कहा तो मुनिवरो! देखो महाराजा नहुषू चरणों में ओत-प्रोत हो करके कहा प्रभु! वास्तव में मैं इतना ही पापाचारी हूँ। हब भगवन्! मैंने राष्ट्रीय विचार, मेरे समाप्त हो गए हैं। अब मैं मानो उस माला को मुझे वर्णन कराइए। तो मुनिवरो! देखो उन्होंने पुनः से मेरे पुत्रो! देखो वो साकल्य एकत्रित करने लगे। साकल्य को एकत्रित करके मुनिवरो! देखो वह महाराजा नहुषू और महाराजा जड़ भरत तो शान्त थे ही परन्तु देखो उन्होंने इन्द्र के यहाँ से, राजा इन्द्र के यहाँ से उन्होंने एक कामधेनु गऊ को प्राप्त किया और कामधेनु गऊ को प्राप्त करके मानो देखो साकल्य लाते। महाराजा नहुषू ने बारह वर्ष का इस प्रकार अनुष्ठान किया क्या उस कामधेनु गऊ के दुग्ध और घृत के द्वारा उन्होंने पुनः से मुनिवरो! देखो वो याग प्रारम्भ किया। उसी याग का पुनः से अनुष्ठान किया।

पुनः से परमात्मा से वार्त्ता

मेरे प्यारे! देखो महाराजा जड़ भरत बारह वर्षों तक प्रातःकालीन दोनों याग करते और याग कर्म करके मानो देखो पत्र पुष्पों का पान करना है। बारह-बारह वर्षों का उन्होंने बेटा! अपना अनुष्ठान किया। प्राणायाम के द्वारा मानो देखो किसी-किसी काल में वायु का सेवन करते थे। मेरे प्यारे! ऐसा कुछ मानो प्रायः प्राप्त हुआ है उनके जीवन से उन्होंने अपने जीवन को बेटा! कितना क्रियात्मकमयी बनाया। मेरे प्यारे! पुनः से मानो देखो जड़ भरत ने और देखो ब्रहे वाचम् मानो देखो नहुषू राजा ने उनको नहुषू राजा नहीं कहते तो उनका नामो परिवर्तन हुआ। उन्हीं को मेरे प्यारे! देखो स्वानित ऋषि कहते थे, तो उन्होंने अपना नाम अब स्वानित ऋषि नियुक्त किया। मेरे प्यारे! वह बारह वर्षों तक पत्रों का अनुष्ठान, बारह वर्ष तक तो मानो वायु का सेवन का अनुष्ठान। मेरे प्यारे! देखो वह पुनः से उस पुनः जन्म ब्रह्मा क्रुतो। मेरे प्यारे! देखो पुनः से वह परमात्मा से वार्त्ता पुनः करने लगे। तो मेरे प्यारे! वो मोक्ष को प्राप्त पुनः से हुए।

माला को धारण करने की प्रेरणा

विचार-विनिमय क्या है? मेरे प्यारे! हमारे यहाँ वेद का जो मन्त्र है वेद के मन्त्र के प्रारम्भ में हम मेरे प्यारे! देखो ओ३म् का उच्चारण करते हैं। ओ३म् का इसीलिए क्या प्रत्येक वेद मन्त्रों में जो ज्ञान और विज्ञान है वो मनका बन करके ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया जाता है और ओ३म् रूपी सूत्र की मानो देखो मनके जब उसमें पिरोए जाते हैं तो बेटा! वो माला बन जाती है। उस माला को जो भी धारण कर लेता है, अपने कण्ठ में आलङ्गिन कर लेता है बेटा! वो ही मोक्ष को प्राप्त होने लगता है। तो आओ मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या? आज मैं कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ विचार ये देने के लिए आया हूँ बेटा! वेद के ऋषि ने अपने में कितना तप किया है। बेटा! वेद का ऋषि कौन होता है? जो वेद के मन्त्रों को ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो करके बेटा! कण्ठ में धारण करके और अपने मानो देखो पाप पुण्य कर्मों का जो चित्त मण्डल में जो संस्कार हैं उन्हें जो मानो देखो उन संस्कारों का क्षय कर लेता है अथवा तपस्या के द्वारा, प्राणायाम के द्वारा जो उनका क्षय कर देता है वह उस माला को धारण करके बेटा! मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

प्रिय याग

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। हमारे यहाँ यागों का बड़ा विशिष्ट वर्णन आया है। विशिष्ट वर्णन क्यों है ब्रह्मे क्योंकि यागाम् जितना भी संसार का सुकर्म है चाहे वह मानो श्रोत्रिय हो, चाहे वह नेत्रिय हो, चाहे मानो देखो घ्राण के द्वारा मन्द सुगन्ध वाला हो, चाहे वाणी के द्वारा ध्वनित होने वाला हो, चाहे प्रीति में आने वाला त्वचा में हो बेटा! देखो इस प्रकार का जो ये याग कर्म है, इस प्रकार का जो सुकर्म है इस सर्वत्र का नाम याग कहलाता है। परन्तु इनमें एक विशेषता ये मानी गयी जैसे तपा आदमी में मेरे प्यारे! अनुष्ठान की अग्नि में जन्म-जन्मान्तरों के शुभ-अशुभ संस्कारों का क्षय

होता है मानो देखो इसी प्रकार जैसे बाह्य जगत में यह अग्नि प्रदीप्त हो करके साकल्य का सूक्ष्म रूप बना करके और वायुमण्डल को पवित्र बना देती है, यजमान की वाणी को पवित्र बना देती है। मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मा अपने में ब्रह्मित होता हुआ वेद की ध्वनियाँ करता रहता है। मानो देखो उद्गाता उद्गीत गाते रहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो वो जो मेरा प्रिय याग है वह अपने में याज्ञिक रहता है, अपने में महान् बन करके पवित्रत्त्व रहता है।

मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा न करता हुआ केवल क्या है? क्या ओ३म् रूपी सूत्र में बेटा! हम प्रत्येक याग की तरङ्गों को पिरोना चाहते हैं। प्रत्येक तरङ्गें बेटा! उस ओ३म् रूपी सूत्र में जब पिरोयी जाती हैं तो मेरे प्यारे! देखो ये माला बन करके इस माला को जो भी धारण कर लेता है वही बेटा! महान् बन जाता है। आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, केवल परिचय देने के लिए आता हूँ और वह परिचय क्या है कि परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए मानो उसी ओ३म् रूपी सूत्र में मानो ज्ञान और विज्ञान को पिरोकर के बेटा! अपने जीवन को महान् बनाएँ और मुनिवरो! देखो उसी में हम रत्त रहने वाले बनें। ये है बेटा! आज का वाक्।

लोक-लोकान्तरों की माला

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा क्या कि हम परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते चले जाएँ। हमारे यहाँ वेदों का जो उद्घोष गाने वाले हैं, उद्गीत गाने वाले हैं मानो वो कई प्रकार से गाया जाता है। जैसे मुनिवरो! देखो माला पाठ है, जैसे माला बन जाती है इसी प्रकार शब्दों को एक-दूसरी आभा में पिरोना है। जैसे मुनिवरो! देखो परमपिता परमात्मा ने जब इस सृष्टि का सृजन किया सृष्टि का मानो देखो निर्माण किया तो एक तो परमाणु में परमाणु निहित है एक परमाणु परमाणु में पिरोया हुआ है। मेरे प्यारे! वो

परमाणुओं की माला बन रही है। इसी प्रकार लोक-लोकान्तरों की माला बन जाती है। मानो नाना पृथ्वियाँ, मानो नाना पृथ्वियों की माला बना करके, सूर्य अपने कण्ठ में धारण किए हुए है। नाना सूर्यों की माला बना करके मानो देखो बृहस्पति अपने कण्ठ में धारण कर रहा है। नाना बृहस्पतियों की माला बना करके मेरे प्यारे! देखो वह आरुणी वृत्तिका मानो देखो अपने में धारण कर रहा है। नाना देखो अप्रतम् ब्रह्म वाचो देवाः नाना अरुणियों की माला बना करके बेटा! देखो ध्रुव अपने में धारण कर रहा है। नाना ध्रुवों की माला बना करके मेरे प्यारे! देखो मूल अपने में धारण किए हुए है और नाना मूल की माला बना करके बेटा! स्वाति अपने में धारण किए हुए है। नाना मानो देखो ध्रुव अब्रवहा अप्रतम् देखो इनकी माला बना करके अचङ्ग मण्डल अपने में पिरोए हुए रहता है मेरे प्यारे! देखो नाना अचङ्ग मण्डलों की माला बना करके मेरे प्यारे! देखो वाचिक मण्डल अपने में धारण कर रहा है। नाना वाचिक मण्डलों की माला बना करके मेरे प्यारे! देखो गन्धर्व अपने में धारण कर रहा है। नाना गन्धर्वो की माला बन करके उसे इन्द्र अपने में धारण कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो इतनी माला बन करके इतनी माला एक दूसरे में जो पिरोयी जाती है तो बेटा! एक आकाश गङ्गाएँ दृष्टिपात होने लगती हैं। मेरे प्यारे! देखो वह जो नाना आकाश गङ्गाएँ बनी हुई हैं। मुनिवरो! देखो लगभग ऐसा मुझे कुछ प्रतीत हुआ है देखो लघु-मष्तिष्क में जब ऋषि-मुनि पहुँचे तो ऐसा प्रतीत हुआ क्या मानो देखो ऐसी-ऐसी मानो पिचासी लाख मालाओं को धारण करने वाली आकाश गङ्गा बनी और वह आकाश गङ्गा जिसको मुनिवरो! देखो हमारे यहाँ नाना रूपों में देखो जिनको सौर मण्डलों के रूपों में प्रतीत मानो प्रतिपादित किया गया है। और ऐसी-ऐसी पिचासी लाख गङ्गाओं को धारण करके मुनिवरो! देखो एक मानो एक अवन्तिका बनी है। और एक मानो देखो पिचासी लाख अवन्तिकाओं की मुनिवरो! देखो एक निहारिका बन गई। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! ये प्रभु का जो अनन्तमयी जगत है।

बेटा! इसी प्रकार ये मानो माला ओ३म् रूपी सूत्र में बेटा! ये लोक-लोकान्तरों की माला बनी हुई है।

देखो मेरे प्यारे जितना भी लोक-लोकान्तरों का ज्ञान और विज्ञान है मुनिवरो! ये ज्ञान-विज्ञान जितनी भी धाराओं में रत्त हो रहा है, तरङ्गों में रत्त हो रहा है ये उस परमपिता परमात्मा की महती है, उसी की वरण किया है मानो ऐसा कुछ प्रतीत होता है, ऐसा कुछ अनुभव होता है। जब समाधि के द्वारा इस ब्रह्माण्ड को योगीजन निहारते रहते हैं तो मेरे प्यारे! देखो ऐसा प्रतीत होता है क्या ये नाना प्रकार की जो माला बन करके एक-दूसरे में ओत-प्रोत हो रही हैं। ये ज्ञान-विज्ञान लोकों का ज्ञान-विज्ञान प्रत्येक वेद मन्त्रों में निहित रहता है। वह मानो देखो वह जो ओ३म् ब्रह्मा मानो देखो वो जो एक-एक वेद मन्त्र में ब्रह्माण्ड की प्रतिभा है और ओ३म् रूपी धागे में पिरोयी हुई है और उस धागे में बेटा! ये देखो सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है।

मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, **आज का वाक्य ये क्या कह रहा है**–प्रत्येक मानव को बेटा! उस माला को धारण करना चाहिए और जिसकी माला बेटा! विच्छेद हो जाती है शाकल्य मुनि की भाँति बेटा! वो मोह में परणित हो करके मानो प्रभु से वार्त्ता उसकी शान्त हो जाती है। इसीलिए मानव को प्रभु से वार्त्ता करनी चाहिए ममता में परणित नहीं .....

शेष अनुपलब्ध.....

दिनाँक : 29 जून, 1985
समय : सायँ 7 बजे
स्थान : ग्राम चांदना नगली
बिजनौर

।। ओ३म् ।।

सुविधा न होने पर याग

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और वह यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं। मानो याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह उसी में वास करता रहता है। तो हम उस परमपिता परमात्मा जो चैतन्य देव है, जो एक-एक मानो कण-कण में व्याप्त है हम उसकी सदैव उपासना करते रहते हैं। तो आज का हमारा वेद मन्त्र अपने में उद्गीत गा रहा है। तो आज का हमारा वेद मन्त्र हमें यह प्रेरणा दे रहा है कि मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। क्योंकि कहीं से मुझे यह प्रेरणा आ रही है क्या याग के ऊपर अपना कुछ मन्तव्य दिया जाए अथवा कुछ विचार-विनिमय होना चाहिए। क्योंकि यागाम् भू वर्णमं। ऋषि-मुनियों ने बेटा! सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके और वर्तमान के काल तक ऋषि-मुनियों ने वेदज्ञं और याग के ऊपर उन्होंने बड़ा अनुसन्धान किया है, और वेद के मन्त्रों को ले करके वेदज्ञ बनने का प्रयास किया। तो आज का हमारा वेद मन्त्र भी कि यागाम् भव वर्णं प्रव्हा व्रत श्वञ्जनं देवाः क्या हे मानव! तू याज्ञिक बन क्योंकि याज्ञिक बनना ही तेरा कर्त्तव्यवाद माना गया है। तो मेरे प्यारे! वेद का एक-एक मन्त्र हमें उस आभा में परणित कर रहा है जिस आभा में जाने के पश्चात् मानवीयत्व हमारा पवित्रवता

को प्राप्त होता रहता है। तो आज का हमारा वेद मन्त्र कुछ अपने में उद्‌गीत गा रहा है अथवा अपने में कुछ वर्णन कर रहा है और वह हमारी जो वर्णन शैली रही है ऋषि-मुनियों की वह बड़ी विचित्रता में रमण करती रही है।

ब्रह्माण्ड एक यज्ञशाला

आज का हमारा वेद मन्त्र यह कहता है यागाम् भवितम् पुरोहिताम् भू वर्ण। तो परमपिता परमात्मा ने जब सृष्टि का सृजन किया तो बेटा! यह जो ब्रह्माण्ड है यह एक प्रकार की यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में मानो प्रायः एक याग हो रहा है और इसमें मुनिवरो! देखो, आत्मा यजमान है, परमपिता परमात्मा स्वयँ ब्रह्मा हैं और उद्‌गीत गाने वाले बेटा! यह पञ्च महाभूत हैं—कोई मानो देखो उनमें अध्वर्यु बना हुआ है, कोई उद्‌गाता है, कोई मानो देखो, अमृते यजमानम् व्रता प्रहा होता बन करके बेटा! वह याग हो रहा है। मैं इस सन्दर्भ में तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाऊँगा, केवल यह क्या यह जो ब्रह्माण्ड है यह भी एक प्रकार की यज्ञशाला है और यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अपना याग हो रहा है। तो मेरे पुत्रो! देखो, यागाम् रुद्रों भवम् प्रवाणमं प्रव्हे यह आत्मा का भी मानो यह शरीर भी एक प्रकार की यज्ञशाला है। हमारे ऋषि-मुनियों की बड़ी विचित्र एक देन रही है क्या मुनिवरो! देखो, भौतिकवाद को आध्यात्मिकवाद से और आध्यात्मिकवाद को मुनिवरो! देखो, ब्रह्म से कटिबद्ध किया है। उन्होंने ब्रह्मवर्चोसि का उद्‌गीत गाया है उसके ऊपर मानव परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण करता रहा है और विचार-विनिमय करता रहा है।

आओ, मेरे पुत्रो! मैं तुम्हें एक पुनरुक्ति की वार्त्ता अवश्य प्रगट करूँगा। क्योंकि हमारे यहाँ नाना प्रकार के विचार होते रहते हैं। पुनरुक्तिः क्योंकि इन वाक्यों को मैं पूर्व काल में भी पुनरुक्ति के रूप में वर्णित करते रहे हैं और यह वाक् मुनिवरो! बारम्बार स्मरण आते रहते हैं कि

ऋषि-मुनियों की कितनी विचित्र एक देन रही है, कितना विचित्र उनका का एक मन्तव्य रहा है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। आओ, मुनिवरो! देखो, मैं पुनरुक्ति कर रहा हूँ क्योंकि यह वाक्य मैंने पूर्व काल में भी प्रगट किया है आज भी हमें स्मरण आ रहा है। और वह वेद मन्त्र कहता है यज्ञो भव प्रमाण वृद्धम् धनद ब्रव्हे वेत्ता हे यज्ञाम! भूतम् ब्रव्हे हे यजमान! तू अपने में याज्ञिक बन, ज्ञान और विज्ञान की इसी से उड़ाने उड़ी जाती हैं। तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें उस स्थली पर ले जाना चाहता हूँ, उस काल में ले जाना चाहता हूँ जहाँ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को शिक्षा देते रहते थे। क्योंकि हमारे यहाँ जब भी विद्यालय को सजातीय बनाया जाता है, या गृह को सजातीय बनाया जाता है तो वहाँ मुनिवरो! देखो, याग का उद्घोष होता है और वह कहता है याज्ञिक बनो, क्योंकि याज्ञिक बनना ही आत्मा के सङ्कल्प के साथ में आत्मवेत्ता अपने में याज्ञिक बनते रहे हैं। मेरे पुत्रो! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातःकालीन सब ब्रह्मचारियों के सहित अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके विद्यालय में वे मुनिवरो! देखो, याग का उदघोष करने लगे और ब्रह्मचारियों को बोले के हे ब्रह्मवर्चो! मानो देखो, **तुम सदैव याज्ञिक बनो और याग करने वाले बनो**, क्योंकि परमात्मा का यह जो भव्य याग है यह बड़ा विचित्र और वेद मन्त्रों में याग का बड़ा महत्त्व आया है।

याग का स्वरूप

याग का केवल एक अभिप्रायः यह भी है क्या याग कहते हैं जितना भी सुकर्म है संसार का उस सर्वत्र का नाम याग माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, माता अपने गर्भस्थल में एक शिशु को पनपाती रहती है वह भी याग कर रही है। मुनिवरो! देखो, संसार अपने में याज्ञिक है। ब्रह्मवर्चोसि ब्रह्म विद्यालयों में बेटा! आचार्य ब्रह्मचारियों को मानो देखो, महान् शिक्षा दे रहा है वह भी याग कर रहा है। राजा अपने

राष्ट्र में उन्नत बनाने में लगा हुआ है और वह अश्वमेध याग करता है, प्रजा और राजा मिल करके वह भी याग है। बेटा! एक मानव देखो, अजामेध याग कर रहा है वह अपनी इन्द्रियों को अजय चाहता है, इन्द्रियों के ऊपर संयम चाहता हुआ वह अपने में याज्ञिक बना हुआ है। तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ प्रत्येक कण-कण में याग हो रहा है। मुनिवरो! देखो, मेघ मण्डलों से मानम् प्रव्हा वृष्टि प्रारम्भ होती है इस पृथ्वी के गर्भस्थल में बेटा! मानो देखो, अपने में परणित हो करके उससे अन्नाद उत्पन्न होता है वह भी देवताओं का भव्य याग कहा जाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, याग की विवेचना देने वाले याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने ब्रह्मचारियों को विद्यालय में याग की विभक्तियाँ उच्चारण कर रहे थे।

याग कैसे करें

मुनिवरो! देखो, जब याग का अपने में भव्यता का वर्णन कर रहे थे तो मुझे विचार आता रहता है बेटा! उस यज्ञशाला में ब्रह्मचारी मानो यज्ञदत्त नाम के उपस्थित हुए और यज्ञदत्त ने कहा हे यज्ञतम् ब्रहे उन्होंने कहा हे पूज्यपाद! आप मानो याग की घोषणा कर रहे हैं, याग का उद्गीत गा रहे हैं हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि हम याग करना चाहते हैं हम याग कैसे करें? याग ऐसे करो कि तुम देखो, यज्ञशाला हो और यज्ञशाला में अष्टखम्भी यज्ञशाला हो, मानो बारह खम्भों की यज्ञशाला हो या चौबीस कोणों की यज्ञशाला हो। मेरे प्यारे! देखो, वह कोणों का वर्णन करने लगे। क्या उसमें याग होना चाहिए। उन्होंने कहा कि देखो, यजमान के द्वारा नाना प्रकार का साकल्य होना चाहिए और नाना चरू के द्वारा वह कामधेनु गऊ के द्वारा वह याग होना चाहिए और उसमें **प्राण की आहुति प्रथम देनी चाहिए** क्योंकि प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः कह करके उसमें हुत करना चाहिए। क्योंकि यह जो प्राण है यही तो मानव का जीवन है। मानो देखो, **प्राण**

और अपान दोनों का समावेश करने से मानव देखो, अपनी यौगिक पद्धति को महान् बनाता रहता है। उसमें समानता का, **जब सामान्य का** उसमें निर्माणं ब्रहे देखो, उसमें और समावेश करता है तो वह ब्रह्माण्ड की आभा को जानने में तत्पर हो जाता है। और यदि वही प्राण देखो, वह **व्यान प्राण और उदान प्राण का मिलान** कर दिया जाता है तो चित्त के मण्डल में प्रवेश कर जाता है। मेरे प्यारे! चित्रम् ब्रव्हा क्रतम् देवाः ऐसा उद्गीत गा करके बेटा! वह चित्त की प्रतिभा का वर्णन कर रहा है। आज मैं तुम्हें चित्त के मण्डल में नहीं ले जा रहा हूँ केवल विचार-विनिमय यह कि याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा क्या तुम मानो देखो, इस प्रकार हुत करने वाले बनो और यज्ञशाला में विद्यमान हो करके कोई उद्गाता मानो देखो, वह **दक्षिणाय में पितरों का स्थान है** देखो, ब्रह्मा पितर कहलाता है। मेरे प्यारे देखो, वह **पश्चिम दिशा में मुनिवरो! देखो, यजमान का स्थान है** और मुनिवरो देखो, **उत्तरायण में उद्गाता उद्गीत गाता है** और मुनिवरो! देखो, **पूर्व दिशा** भवा कृतम् उदन् गतम् देखो, उसका उद्गाता का स्थान है। मेरे प्यारे! देखो, उद्गाता से अध्वर्यु का स्थान आ जाता है और वह मुनिवरो! देखो, याग प्रारम्भ होता है। होतागण उसके मानो वृत्तियों में रत्त रहते हैं। तो आओ मेरे प्यारे! इस प्रकार याग होना चाहिए।

यज्ञशाला न होने पर याग

मुनिवरो! देखो, यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा हे प्रभु! यदि कहीं यह सुविधा हमें न प्राप्त हो तो हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा कहीं इस प्रकार की यज्ञशाला न हो तो तुम अग्नि का अग्न्याधान करो और अग्नि धान करते हुए मानो देखो, नाना समिधाओं के द्वारा तुम याग करो **और कहो पहली समिधा दे करके** हे समिधे! मानो तू मेरी आत्मा का ईन्धन है, मेरे प्राण का ईन्धन है तो यह कहो कि प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा और

उदानाय स्वाहा कह करके पञ्च आहुति देने के लिए तत्पर हो जाओ। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उन्होंने कहा इस प्रकार तुम साकल्य क्योंकि यह जो समिधा है यही तो मानो देखो, सबसे प्रथम सृष्टि का जब चलन प्रारम्भ होता है तो **सबसे प्रथम स्थावर सृष्टि का जन्म होता है और स्थावर सृष्टि में मानो देखो, सबसे प्रथम कोई मानो देखो, वृक्ष का जन्म हुआ है तो वह पीपल का वृक्ष है।** तो मेरे प्यारे! जो सृष्टि के प्रारम्भ में स्थावर सृष्टि में आता है उसके पश्चात् और नाना प्रकार के वृक्षों का अभ्योदय होता रहता है।

जल के द्वारा याग

विचार आता है बेटा! ऋषि कहता है क्या हे प्रभु! यह भी मैंने स्वीकार कर लिया परन्तु मैं यह जानना और चाहता हूँ कहीं मानो समिधा भी न प्राप्त हों और देखो, चरू भी न हो तो प्रभु हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा **कहीं अग्नि भी प्राप्त न हो, समिधा भी और चरू भी तुम्हें न प्राप्त न हो** तो मानो देखो, जल से अमृतम् जल के द्वारा तुम याग करो। जलम् ब्रह्मणा व्रतम् जल व्रते देखो, जल को अञ्जलि में ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहा और देखो, अमृताम् भू वर्णनं ब्रव्हे समाम् उद्गीताम् भू वर्णम् उसका उद्गीत गाओ। पञ्च प्राणों के द्वारा तुम हुत करने के लिए तत्पर हो जाओ और अञ्जलि ले करके उस अञ्जलि में मानो देखो, तुम जल के द्वारा तुम याग करो। यह जल अमृत है, यह जल ही मानो देखो, तेजोमयी बृही कहलाता है। मेरे प्यारे! जब हम जैसे शिशु माता के गर्भस्थल में होते हैं तो माता मानो देखो, अमृता को अपने में धारण करती रहती है। तो मेरी भोली माता को यह ज्ञान नहीं है क्या मेरे बाल्य गर्भस्थल में उसका ओढ़न क्या है? उसका बिछौना क्या है? और उसके पाशे क्या बने हुए हैं। मेरी भोली माता नहीं जानती, परन्तु देखो, वेद का ऋषि, वेद का मन्त्र कहता है क्या

आसन भी आपो है और ओढन भी जल है, मानो पाशे भी जल बने हुए हैं। उसमें बेटा! देखो, वह बाल्य अपने में क्रीड़ा कर रहा है। वह अपने में अभ्योदय हो रहा है, अपने में धारयामि बना हुआ है। तो वेदज्ञम् ब्रव्हा कृतम् देवा वेद का आचार्य कहता है क्या माता के गर्भस्थल में मानो देखो, ओढ़न ही जल है, बिछौना भी जल है, पाशे भी जल है और यह जल ही मानो तेजोमयी कहलाता है। हे मेरी भोली माता! तू नहीं जानती तेरे गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है परन्तु देखो, समुद्रों में आपो अपने में प्रवेश कर रहा है, चन्द्रमा की कान्ति से वह आभा में परणित हो रहा है। तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार कहा कि देखो, यह जो जल है इसकी अञ्जली ले करके कहो प्राणाय स्वाहाः क्योंकि प्राण ही अमृत को धारण करता है–प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः और उन्होंने कहा समानाय स्वाहा कह करके वह मानो देखो उदान स्वाहाः वर्णसप्ते स्वाहा व्रतम् अपने में ही अपनेपन को धारण करता रहता है।

पृथ्वी की रज से याग

मेरे प्यारे! यज्ञदत्त उपस्थित हुए। प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कहीं ऐसी स्थली हो क्या प्रभु कहीं देखो जल भी हमें प्राप्त न हो तो हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि तुम्हें जल भी तुम्हें प्राप्त न हो तो मानो देखो, तुम इस पृथ्वी की रज को ले करके तुम याग करो। और पृथ्वी की रज को ले करके कहो कि प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः और समानाय स्वाहाः उदानाय स्वाहा कह करके मुनिवरो! देखो, हुत को प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! **पञ्च महावृत्तियों में देखो, यह जगत निहित हो रहा है।** जब मुझे इस संसार के विज्ञान की आभा प्राप्त होने लगती है तो विज्ञान अपने में कितना सार्थक कहलाता है। क्योंकि उस समय तुम यह पृथ्वी की रज को ले करके कहो, प्राण, अपान, उदान, समान कह करके आहुति प्रदान करो। मेरे प्यारे! देखो,

यह जो पृथ्वी की रज है अरे! इसी में तो गुरुत्व कहलाता है। जितना यह संसार पिण्ड रूप में दृष्टिपात आ रहा है–चाहे वह पृथ्वी, चाहे वह मानव का पिण्ड हो, चाहे वह मुनिवरो! देखो, कोई भी प्राणी पिण्ड रूप में विद्यमान क्यों न हो, चाहे वह लोक-लोकान्तरों के रूप में क्यों न हो परन्तु उस में गुरुत्व अवश्य होता है। यदि गुरुत्व का तरलत्व का मिश्रण नहीं होगा तो यह पिण्ड नहीं बनेंगें। मानो देखो, जब मैं विचारता रहता हूँ क्या यह जो पृथ्वी मुझे दृष्टिपात आ रही है पिण्ड रूप में मुनिवरो! देखो, यह लगभग तीस लाख पिण्ड बने हुए हैं इस पृथ्वी के। मेरे पुत्रो! इनकी माला बना करके मनकों की भाँति यह सूर्य अपने में धारण करता रहता है और सूर्य के भी पिण्ड बनते हैं। मुनिवरो! देखो, पिण्डाकार वाला यह सूर्य एक सहस्त्र सूर्य या किसी भी रूप में वर्णित होते हैं। तो मानो देखो, यह सर्वत्र जगत पिण्ड के रूप में एक लोक है, दूसरा उसके साथ है वह भी पिण्ड रूप में है। मेरे प्यारे! ब्रह्म सूत्र में पिरोया हुआ यह जगत है, ब्रह्माण्ड है यह निहारिकाओं के रूप में भी विद्यमान रहता है। तो मेरे प्यारे! मैं इन वाक्यों को दूरी नहीं ले जा रहा हूँ। ऋषि ने जितना वर्णन किया है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यह कहा हे यज्ञदत्त! तुम मानो देखो, इस पृथ्वी की रज को ले करके यह पिण्ड का मूल कारण बनती है। यदि मानो देखो, जल भी है अग्नि भी है, सर्वत्र है, परन्तु यदि गुरुत्व नहीं है, पृथ्वी का गुण नहीं है तो पिण्ड नहीं बनेगा। इसी प्रकार देखो, यह तीन हैं मानो देखो तीन पदार्थ हैं देखो, तरलत्व, गुरुत्व और तेजोमयी इन तीनों से पिण्ड बनते हैं और वायु भ्रमण कराती है अन्तरिक्ष में वह गमन कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, **यह संसार सर्वत्र पञ्चीकरण में निहित हो रहा है।**

हृदयरूपी यज्ञशाला में याग

आओ, मेरे पुत्रो! देखो, वेद का ऋषि कहता है, याज्ञवल्क्य ने जब पिण्ड का वर्णन किया तो उस समय उन्होंने कहा प्रभु! मैंने यह

जान लिया परन्तु मैं मानो देखो यह पृथ्वी की रज भी कहीं प्राप्त न हो और हम पर्वतीय क्षेत्रों में प्रवेश हो जाएँ तो प्रभु! हम याग कैसे करेंगें? उन्होंने कहा तुम एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते रहो वर्णनं ब्रह्मा वर्णनम् ब्रव्हे वृत्तम् स्वाहाः इस प्रकार तुम याग करने में तत्पर हो जाओ। मानो तुम देखो, ब्रह्मणे अपने मन में उद्गीत गाते रहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः करके तुम याग करो। मानो देखो, वेद मन्त्रों का उद्गीत है और प्राण को सत्ता में लाना है। मानो देखो, तुम उस समय स्वाहा कह करके अग्निहोत्र करो। अग्नि होत्र अपने मन से करो, हृदय से करो, क्योंकि हृदयं ब्रह्मा हृदयं ब्रव्हे **यह हृदय ही है जो परमात्मा से हमारा मिलान करता है।** बेटा! हृदय ही सर्वत्र इन्द्रियों का ज्ञान और विज्ञान उसमें समाहित हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, जैसे साकल्य बनता है, साकल्य कैसे बनता है–एक आध्यात्मिक साकल्य होता है बेटा! नेत्रों से रूप लिया जाता है, श्रोत्रों से शब्द लिया जाता है, घ्राण से सुगन्ध ली जाती है और त्वचा से प्रीति ली जाती है और रसना से मुनिवरो! देखो, रस लिए जाते है और इनका पञ्चीकरण हो करके बेटा! इनका साकल्य बनता है। और साकल्य बन करके मेरे पुत्रो! वह हृदय में, हृदय रूपी यज्ञशाला में वह सब समाहित हो जाता है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना महान् विज्ञानवेत्ता है, कैसा निर्माण किया आपने क्या मानो देखो, सर्वत्र का साकल्य बन करके अरे! हृदय में तो स्थिति है। माता को दृष्टिपात कर रहे हैं वह भी हृदय में है। पत्नी को दृष्टिपात कर रहा है, ब्रहे वह भी हृदय में है। पुत्र और पुत्र वधुओं को निर्णयं ब्रव्हे अपने में मानो समाहित कर रहा है। मेरे प्यारे! संसार क्या लोक-लोकान्तरों को दृष्टिपात करके उनकी स्थिति सब हृदय में समाहित हो जाती है। मेरे पुत्रो! देखो, यह हृदय ही अपने में याज्ञिक बना हुआ है। जब हृदय रूपी यज्ञशाला में यजमान अथवा देखो, साधक अपने में याग करता है तो बेटा! अपने हृदय का हृदय से मिलान करता है, मानव का हृदय

परमात्मा का हृदय, दोनों का जब समन्वय हो जाता है तो बेटा! दोनों का एकोकीकरण हो जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें विशेष चर्चा नहीं प्रगट करूँगा। आज का विचार-विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहें। मेरे पुत्रो! देखो, यज्ञदत्त अपने स्थान पर शान्त होने लगे। उन्होंने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से कहा प्रभु! आपको धन्य है। आप तो यागजयी कहलाते हैं और बैलकंम ब्रहे वृतम् आपका अग्निमयी स्वरूप कहलाया जाता है। हे प्रभु! आपके हृदय से जो उद्गारों का जन्म होता है वे उद्गार बड़े पवित्रत्व को धारण करते रहते हैं। हे प्रभु! आपको मैं नतमस्तिष्क हो रहा हूँ परन्तु देखो, मेरे हृदय में जानकारी की सदैव इच्छा बनी रहती है। हे प्रभु! देखो, **यह जो याग है यह है क्या?** उन्होंने कहा यागाम् भू वर्णनं ब्रह्मे तपम् ब्रव्हे यह याग मानो देखो, तपस्या का मूल है। उन्होंने कहा प्रभु! यागाम् भू वर्णनं। उन्होंने कहा याग एक भू कहलाता है, याग भुवः कहलाता है, याग ही स्वः कहलाता है। यह तीन लोक कहलाते हैं इसमें मानो देखो, यह परमाणु गमन करते हैं और तीन ही प्रकार की आभा में यह सर्वत्र परमाणु विद्यमान हो करके एक वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण होता रहता है। यह मुनिवरो! देखो, उन्होंने एक याग की विवेचना की है। आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा में न जाता हुआ केवल यह निर्णय देना चाहता हूँ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! इस प्रकार की शिक्षा दी और वह मानो उद्गीत गाते अपने में मौन हो गए। उन्होंने कहा कि **ब्रह्मचारियों का याग का एक ही अभिप्रायः है कि मानव को तपस्वी रहना चाहिए** और तप किसे कहते हैं? मेरे प्यारे! दस इन्द्रियाँ हैं और ग्यारहवां मन है देखो, इनको सबको एकाग्र करते हुए इनका साकल्य बना करके इनका विचार-विनिमय किया जाए, विचार बनाया जाएँ। तो बेटा! मन, विचार और गति मानो यह तीन ही कहलाते हैं और यह त्रैतवाद में सर्वत्र जगत विद्यमान है। जब संसार

की रचना होती है परमपिता परमात्मा मानो रचयिता हैं, प्रकृति रचने वाली है, आत्मा इसका उपभोग करने वाली है। इसी प्रकार अ, उ और मैं ओ३म् की तीन मात्रा कहलाती हैं। मुनिवरो! देखो, यह सर्वत्र जगत त्रैतवाद कहलाता है। रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण ये तीन गुणाधानम् कहलाते हैं। भूः, भुवः, स्वः यह तीन ही लोकों की वृत्तियाँ विद्यमान हैं। तो इस प्रकार मेरे पुत्रो! अपने में वर्णन–अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

ओ३म् यशौ सर्वम् धनु माम् वाचन्न नमः।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी हमारी यह जो वाणी है यह एक ऐसी स्थली पर मानो उद्‌घोषित हो रही है जहाँ एक मानो देखो, एक याग का आयोजन हो रहा है, वह सम्पूर्णता को प्राप्त हो गया है। सम्भव ब्रह्मणे देखो, आज मेरा आत्मा प्रायः यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, मानो द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे। क्योंकि यागाम् यव्रते यह जो याग जैसा कर्म है यह सदैव देखो, अपने में अद्वितीय कहलाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो सदैव गागर में सागर की कल्पना करते रहते हैं वह इस संसार के सूक्ष्म से मानो गागर को सागर में और गागराणि वृत्तम देखो, गागर में परणित करते रहे हैं। यह सदैव इनका एक मन्तव्य रहा है कि हम अपने में महानता की आभा में सदैव रत्त रहें। तो आज का हमारा, आज मैं विशेष नहीं मैं देखो, राष्ट्र या वाकत्रोतो की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। विचार-विनिमय मैं यह देने अपने पूज्य को निर्णय कराता रहता हूँ, क्या देखो, आधुनिक यह जो काल चल रहा है यह प्रायः यह वाम मार्ग का काल है। परन्तु देखो, याग जैसे क्रियाकलाप से भव्यता से परणित होते रहे हैं और मैं यजमान के प्रति मेरी मनोकामना रहती है हे यजमान! तेरे जीवन का

सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को प्रेरणा दे करके और याग के ऊपर ही देखो, कुछ मन्तव्य दिया।

आज का विचार, आज के विचारों का हमारा मन्तव्य यही है कि हम अपने में महान् बनें और याग जैसे क्रियाकलापों को देखो, गृह में प्रवेश कराते रहें क्योंकि यह सृष्टि के प्रारम्भ से ही क्रियाकलाप चला आ रहा है। और यह सदैव मेरा अन्तरात्मा यजमान के साथ रहता है, हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तो यह आज का विचार हमारा अब सम्पन्न होने जा रहा है। आज का वाक्य क्या कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर विचार-विनिमय करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ने अनन्तता में वर्णित किया है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी महानन्द जी ने अपना कुछ मन्तव्य प्रगट किया। इनका हृदय तो बड़ा विचित्र रहता है, इनके विचारों में एक महानता का प्रायः दर्शन होता रहता है। तो आज का विचार यह सम्पन्न होने जा रहा है, समय मिलेगा शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगें। अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनु वायाः।
ओ३म् रथम् ब्रह्म वाचन्न ग्राहाणाम् त्वा यम सर्वा आपाम्।

दिनाँक :
समय : } अनुपलब्ध
स्थान :

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. मानव को वह कर्म करने चाहिए कि जब वह संसार से जाए तो वह कर्म उसके साथ जाएँ।
2. वह कौन सा कर्म है? परमात्मा का चिन्तन करना, प्रभु को सर्वव्यापक मानकर कोई पाप न करना।
3. हमारे यहाँ दो प्रकार का विज्ञान कहा गया है। भौतिक विज्ञान दूसरा आध्यात्मिक विज्ञान।
4. भौतिक विज्ञान वह कहलाता है जिसमें नाना प्रकार के प्रकृति से अणुओं को महाअणुओं को एकत्रित किया जाता है।
5. आध्यात्मिक विज्ञान ऊँचा विज्ञान है जिस विज्ञान से इस संसार के रचियता को पा लिया जाता है।
6. हमारे यहाँ चार प्रकार की बुद्धियों का विवरण आता है बुद्धि, मेधावी बुद्धि ऋतम्भरा बुद्धि और प्रज्ञा बुद्धि।
7. मानव का कर्त्तव्य है कि वह प्रातः व सायँ प्रभु का चिन्तन करे। प्रभु से कहे प्रभु यह सब कुछ आपका है, मेरा नहीं।
8. आज सबसे पूर्व अपने को अपनाना है। अपने को विचित्र बना लेना है।
9. प्रत्येक इन्द्रिय पर शासन करना हमारा योग है।
10. जब मानव अपने को परमात्मा के अर्पण कर देता है तो उसका आत्मा निर्मल और पवित्र हो जाता है।
11. आज तपस्या करो माँ गायत्री की गोद में जाकर मग्न हो जाओ।
12. आज मानव को सदाचार को अपनाना है, अगर नहीं अपनाएगा तो अपने को ही शान्त कर देता है।
13. आज संसार में वह ब्रह्मचारी बनते हैं जो काम, क्रोध, मद, लोभ और मोह को मृत्यु समझते हैं।
14. आज यदि संसार सदाचारी बनना चाहता है तो सबसे पूर्व मेरी माता को सदाचारी बनना होगा।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

मास्टर ऋत्विक

श्रीमति ब्रजबाला धर्मपत्नि श्री राजकिशोर त्यागी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला गाजियाबाद, उ.प्र. ने अपने प्रिय पौत्र ऋत्विक सुपुत्र श्रीमति अञ्जली एवम् श्री हरिओम त्यागी के जन्मदिवस की शुभ बेला के आगमन पर प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 1100 रु. का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए प्रदान किया है। त्यागी जी का परिवार पूज्यपाद-गुरुदेव के प्रति अत्यन्त आस्था एवम् श्रद्धा रखता है और उनके प्रवचनों का निरन्तर अध्ययन करते हुए और नित्य दैनिक अग्निहोत्र का अनुष्ठान करते हुए अपने परिवार एवम् सम्बन्धियों को ऊर्ध्व गति में ले जाने में निरन्तर प्रयत्नशील है।

इस परिवार से समिति को व श्री गांधी धाम समिति लाक्षागृह बरनावा को निरन्तर सहयोग प्राप्त होता रहता है जिसके लिए समिति हृदय से हार्दिक आभार प्रकट करती है और प्रिय सुपौत्र को जन्म दिवस की बारम्बार शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए परिवार के सभी सदस्यों के लिए दीर्घआयु, सुख शान्ति एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमात्मा से विनय करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

दान-सूची

वैदिक अनुसन्धान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालु महानुभावों ने अपना सात्त्विक सहयोग प्रदान किया है :

1. श्री पुरुषार्थ परिधि, ग्राम निवाड़ी, गाजियाबाद	5100 रुपये
2. श्रीमति स्वर्णलता गुप्ता धर्मपत्नी श्री आर. के. गुप्ता, मेरठ, साकेत	5000 रुपये
3. श्री वीर सिंह, ग्राम फफून्डा, मेरठ	2500 रुपये
4. श्रीमति मीरा भगत, न्यू फ्रैंड्स कॉलोनी, नई दिल्ली	2100 रुपये
5. श्री राजेन्द्र शर्मा, रासना	2100 रुपये
6. श्री जितेन्द्र चौधरी, मालवीय नगर, नई दिल्ली	2100 रुपये
7. श्री राजेश कुमार, जनकपुरी, नई दिल्ली	2000 रुपये
8. यज्ञ में सार्वजनिक दान, ग्राम अतराड़ा	1100 रुपये
9. श्री योगेन्द्र सिंह, बुलन्दशहर, उ.प्र.	1100 रुपये
10. श्री विपिन त्यागी सुपुत्र श्री मा. शिवराज त्यागी, वशुंधरा, गाजियाबाद	1100 रुपये
11. श्रीमति कमला देशवाल, 37/10 तृतीय मंजिल, ओल्ड राजेन्द्रनगर	1100 रुपये
12. श्रीमति एम. टी. रत्ना, 13ए/92 तृतीय मंजिल, डब्ल्यू.ई.ए.	1100 रुपये
13. श्री आदित्य त्यागी, रजपुरा, मेरठ	1100 रुपये
14. श्री मंगलसैन सुपुत्र श्री दीपचन्द, ग्राम फफून्डा, मेरठ	1100 रुपये
15. श्री कालूराम त्यागी, दिनकरपुर	1100 रुपये
16. श्री बिरेन्द्र त्यागी, वी. एण्ड पो. तलहटा, गाजियाबाद	1000 रुपये
17. श्री जितेन्द्र कुमार त्यागी, हापुड़, उ.प्र.	501 रुपये
18. श्री यशपाल राठी, सैनपुर, मुजफ्फरनगर	501 रुपये
19. श्री शिवकुमार शर्मा, नंगला ओडर, सरधना, मेरठ	501 रुपये
20. श्री सोमयज त्यागी, ग्राम नेकपुर, मेरठ	501 रुपये
21. श्री नरेन्द्र एवम् मोहित त्यागी, ग्राम नावला, मुजफ्फरनगर	501 रुपये
22. श्री प्रेमपाल त्रिपाठी	501 रुपये
23. श्री महिपाल, ग्राम तलहेटा, गाजियाबाद	500 रुपये
24. श्री योगेश कुमार, ग्राम भूनि, मेरठ	500 रुपये

25. श्री महेन्द्र सिंह त्यागी सुपुत्र श्री राजकुमार त्यागी, घलौली, मुजफ्फरनगर 500 रुपये
26. श्री सुरेन्द्र, रोहिणी, दिल्ली 500 रुपये
27. श्री संजय, छतरपुर, दिल्ली 500 रुपये
28. श्री चन्द्रशेखर त्यागी, मकनपुर 500 रुपये
29. रिटायर्ड एसीपी मीना, साकेत, नई दिल्ली 500 रुपये
30. श्रीमति कमला ढ़ल, गुडगॉव 500 रुपये
31. श्री मूल चन्द, ग्राम सुराना, गाजियाबाद 500 रुपये
32. कु. सोनाली त्यागी, वी. एण्ड पो. तलहटा, गाजियाबाद 500 रुपये
33. श्री छुट्टन लाल, ग्राम धनौरा 251 रुपये
34. श्री प्रदीप त्यागी, गाजियाबाद 251 रुपये
35. स्वामी रणवीर रघुवंशी, कुतबी, पो. कुतबा, मुजफ्फरनगर 250 रुपये
36. श्री रणवीर सुपुत्र श्री वचन सिंह, मुलसम, बागपत 250 रुपये
37. श्री राजेन्द्र त्यागी, रहदरा, मेरठ 250 रुपये
38. श्री विजयपाल त्यागी, माछरा, मेरठ 250 रुपये
39. श्री साम्भी, चण्डीगढ़ 250 रुपये
40. श्रीमति पुष्पा त्यागी धर्मपत्नी श्री मंगल सैन त्यागी, कैथवाड़ी, मेरठ 201 रुपये
41. माही सुपुत्री श्री ब्रिजेश कुमार, साकुलीपुर, मेरठ 200 रुपये
42. श्री कन्हैया लाल, सरधना 200 रुपये
43. मा. जय भगवान, कल्याणपुरी 200 रुपये
44. डॉ. शिव कुमार, ग्राम शाहपुर, मुजफ्फरनगर 200 रुपये
45. श्री हरिचन्द्र, ग्राम हर्रा, मेरठ 160 रुपये
46. श्री सोनू त्यागी, ग्राम हुलाबी कला 111 रुपये
47. श्री हरी शंकर भारद्वाज, राज चौपला, मोदी नगर, गाजियाबाद 101 रुपये
48. गुप्त दान 101 रुपये
49. श्री आशीष शर्मा, बरनावा 101 रुपये
50. डॉ. सोमबीर आर्य, ननौता 101 रुपये
51. श्री विनीत त्यागी, गाजियाबाद 101 रुपये
52. स्वाति त्यागी, बरनावा, बागपत 101 रुपये
53. श्री गजेन्द्र प्रसाद सुपुत्र श्री शंकर लाल, बरनावा, बागपत 101 रुपये
54. श्री अरविन्द कुमार, शिवनगर, मोदीपुरम्, मेरठ 101 रुपये

55. ज्योति, बरनावा, बागपत	100 रुपये
56. श्री विनांद कलीना	100 रुपये
57. श्री ब्रजेश त्यागी, नारंगपुर	100 रुपये
58. श्री किशन पाल, निवाड़ी रोड़, मोदीनगर	100 रुपये
59. श्री प्रताप सिंह सुपुत्र श्री करन सिंह, ग्रा./पो. फफून्डा, मेरठ	100 रुपये
60. श्री जगबीर गिरी, गंगा विहार कॉलोनी, गाजियाबाद	100 रुपये
61. श्री ओमप्रकाश राणा, दाहा	100 रुपये
62. श्री देवशरण त्यागी, दिनकरपुर	100 रुपये
63. श्री शिवम्, फुगाना	100 रुपये
64. श्री कमल सिंह, मोदीनगर	100 रुपये
65. श्री राजेश्वर त्यागी, बागपत	100 रुपये
66. श्रीमति स्वर्गीय हेमवती, बरनावा	100 रुपये
67. श्री राजपाल वानप्रस्थी, सरधना, मेरठ	100 रुपये
68. श्री दुष्यन्त शर्मा, ग्राम फफूण्डा, मेरठ	100 रुपये
69. श्री उदयराज सिंह, ग्राम नांरगपुर	100 रुपये
70. श्री त्रिलोक चन्द, ग्राम फफून्डा, मेरठ	100 रुपये
71. श्री चन्द्रकाली, भदौरा	51 रुपये
72. श्री अर्पण त्यागी, ग्राम पिलाना, बागपत	51 रुपये
73. श्री राजपाल धामा, बिनौली, बागपत	51 रुपये
74. श्री रविन्द्र त्यागी, दिनकरपुर, मुजफ्फरनगर	50 रुपये
75. श्री सुशील त्यागी, ग्राम सठडी	50 रुपये
76. श्री महेन्द्र सिंह, ग्राम निमलोना	50 रुपये
77. श्री आयुष	50 रुपये

सभी उपरोक्त दान दाताओं का समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और उनको परिवार सहित जीवन में सुख, शान्ति व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	30.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	45.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, ए-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	1000 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	600 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर उर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हमें विचारना है कि हम सर्वत्र प्रभु को दृष्टिपात् करें, कण-कण में जब हम प्रभु को दृष्टिपात् करते हैं तो मानव पाप-कर्म नहीं करता। मानव पाप-कर्म उस काल में करता है जब परमात्मा को अपने से दूर कर देता है और दूर क्यों कर देता है? केवल अज्ञानता के वश क्योंकि वह प्रभु को जानता नहीं। जो मानव प्रभु को जानता है वह पाप नहीं करता, पाप वही मानव किया करता है जो प्रभु से दूर हो जाता है। जो प्रभु को कण-कण में, मनों में, चक्षुओं में, श्रोतों में, प्रत्येक इन्द्रिय में प्रभु की प्रतिभा स्वीकार करता है। जिसने जो वस्तु बनाई है उसमें वह रमण भी कर रहा है और जब मानव को यह निश्चय हो जाता है कि वहाँ मानव पाप नहीं करता।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 47 : अंक : 559
अप्रैल 2019

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-04-2019
Published on 5th day of the same month